UG Sem II Social Psychology

~~MA (Sem II)~~

MJC-2

~~Sem I, Paper II~~

~~advance Social Psychology~~

Topic- Prosocial behaviour (Meaning and characteristics)

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है वह समाज अपनी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ती हेतु समाज में रहता है ज्यादातर व्यक्ति अपने हित के बारे में सोचते हैं और समाज के हित के बारे में नहीं सोचते हैं अतः व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह समाज से अपने हित एवं समाज के हित में कार्य करना चाहिए। कभी-कभी ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है कि व्यक्ति को बिना अपने लाभ के बारे में सोचे समाज के हित में कार्य करना पड़ता है ऐसे कार्य को समाजो-मुख या समाजपकारी व्यवहार कहते हैं। कुछ समाजपयोगी व्यवहार परहितवाद या परोपकार के समान है अर्थात बिना अपने हित का ध्यान रखते हुये दूसरों के हित एवं कल्याण के बारे में सोचना या कार्य करना। व्यक्ति समाजोपकारी व्यवहार करे उसके लिए व्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वह समाजोपकारी व्यवहार की विशेषताओं को समझें।

समाजपकारी व्यवहार की कुछ विशेषताए है जो निम्नलिखित है।

(1) इस व्यवहार का उद्देश्य दूसरे व्यक्तियों को लाभ पहुंचाना है।

(2) किए गए लाभ के बदले में किसी प्रकार की लाभ की कामना या अपेक्षा नहीं करना।

उदाहरण के लिए अगर कोई महिला सड़क जा रही है तो उस कुछ उचक्के पीछा कर उसका पर्स छीन लेता है तो महिला के पुकार पर उस दौर का उस महिला की का व्यक्ति से छीनकर महिला को दे देता है तब महिला उस व्यक्ति को पर्स से पैसा निकालकर उस व्यक्ति को देती है तो इस कार्य को समाजोपकारी कार्य नहीं कहेंगे। चूँकि इस कार्य के बदले में व्यक्ति ने लाभ स्वीकार कर लिया और अगर वह व्यक्ति पैसा नहीं लेता तो वह परस्पर समाजोपकारी कहा जाएगा।

(4) इसमें स्वेच्छा से कार्य करने का गुण होना चाहिए किसी दबाव से किया गया कार्य परोपकारी नहीं कहा जायगा।

(5) इसका उद्देश्य लाभ पहुँचाने का नियत से है

(6) समाजोपकारी कार्य करने से व्यक्ति को कुछ कीमत चुकानी पड़ती है

Kumar Patil
Maharaja College, Ara